

मीरपुर-आगमन

भगवान् स्वच्छन्द लीलाबिहारी हैं । जब जिस भक्त के साथ जैसी मौज हुई लीला कर ली । वे अपने भक्त को कभी लँगोटी बाबा के रूप में देखकर खुश होते हैं, कभी स्वामी के रूप में, कभी हँसते खेलते देखकर खुश होते हैं तो कभी रोते गाते । जब सन्त सद्गुरु से विदा होकर मेहड़ग्राम में पहुँचे तब उन्हें रात्रि में एक स्वपन आया । स्वपन में स्वामी आत्मारामसाहब जी ने कहा-“मीरपुर की दरबार के महन्त स्वामी ज्ञानदासजी का * शरीर पूर्ण हो गया है । अब तुम जाकर वहाँ की सेवा का भार सम्हालों ।” भक्तकोकिलजी ने रोहिड़ी के दरबार के महन्त गंगारामजी को चिट्ठी लिखकर पूछा । स्वप्न सत्य निकला । समाचार मिलने से लोग मेहड़ में आकर भक्तकोकिलजी को रोहिड़ी ले गये । वहाँ मीरपुर के भक्तजन भी आ गये और अतिशय प्रेम-श्रद्धा से आग्रह करने लगे कि आप मीरपुर में चल- कर दरबार की सम्भाल स्वीकार करें । भक्तकोकिलजी ने पहले अस्वीकार कर दिया, परन्तु जब लोग बहुत ही प्रेमपूर्ण आग्रह

* स्वामी आत्मारामसाहब के बाद दो वर्ष तक स्वामी श्रीराधाकृष्णदासजी महन्त रहे । उनके बाद यही स्वामी ज्ञानदासजी गद्दी के उत्तराधिकारी हुए ।

करने लगे तब उन्होंने कहा कि मेरी सेवा, पूजा, भजन, एकान्त-
वास, त्याग, वैराग्य आदि में कोई किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करे
तो मैं दरबारसाहब की सेवा कर सकता हूं । सबने सहर्ष
स्वीकृति दी । श्रीभक्तकोकिलजी मीरपुर लौट आये ।

श्रिणु कमले, । महादेव सरीखे भाग्य में उन्मत हुए दशरथ राजाने,
अच्छी सजावट वाले मार्ग में, देव गन्धर्वोकर फूल वर्षन सहित गाए
सारंग से, अमरापुरी वत् अयोध्या के नानारंग में, मध्यान के समय प्रवेश
किया ॥३४॥

मंगल सामग्रीयों से भये धूप धूत्र के बादलों वाले, इन्द्र धनुष्
चम-

कते हुए तोरणों वाले, ध्वजाओं कर भई छाया से मिटी हुई घाम वाले
राजमार्ग में दुलिहनि दूलह सहति वह नरेश्वर पैठत भया । उस समय
मैथिलदेश की वीर्यशुल्का, पृथ्वी से प्रगट भई बालका के दर्शन की
अभिलाषमती पुरवासिन्यों के नेत्रों से भरी हुई सोने की खिड़कीओं में,
भुवनों के द्वार अटारी झरोखेमें, मन्मथ कुशला बाला, सर्वकाम
परित्यागकर

हाथों में फूलमालायें लिए, इस प्रकार चेष्टा करत भई ॥३५॥

देखने वाले झरोखे को शीघ्र जाती हुई किसी एक ने, डोरा खुल
जाने से गिरी हुई माला वाले हाथसे तड़ागी के जूड़े को लिये हुए बाँधने
की सुधि वहाँ पहुँचने तक नहीं ली । नायन का थामा हुआ पाँव गीले
महावर लगे हुए को खैचकर किसी प्रमदा मंदगति त्यागी हुई ने,
सौपान को झरोखे तक लाख के रंग से रच दिया ।

का मृगनयनी, दाहिनी आँख को काजल से सुशोभित करके, बाई
आँख की पावन वाली सलाई हाथ में लिये हुए, ऐसे ही झरोखे के निकट
गई ॥३६॥

शीघ्र चलने से टूटी हुई नीवी न बांध सकी कोई एक गज गामिनी,
झरोखे में ढीठ लगाई हुई हाथ में वस्त्र थामि रह गई हुई ने, मुद्रका के
हीरे की चमक डालते हुए नाभि मण्डल को शारदा रितु पौषमास के
तड़के की नाई शोभित किया । उभय सन्ध्या के मध्य में जैसे सूर्यदेव
शोभित हों तैसे दो भ्रुवों के मध्यमें कुकुमबिन्दु पर प्रकाशती हुई सर्वचाव